तस्वीरों में: भारत में गर्भावस्था और दर्द के कई सफर

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण IV, 2016 (NFHS IV) के अनुसार, भारत में सर्वेक्षण का उत्तर देने वाली महिलाओं में से 53% एनीमिया से पीड़ित थीं। यही मुख्य कारण है कि सरिता जैसी महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान इतना दर्द होता है।

लेख- रोहित जैन द्वारा 1 अगस्त, 2019

23 साल की सपना, इंदौर में अपनी कॉलोनी में अपने बच्चों के साथ। वह चार बच्चों की माँ है।

"महिलाओं को पुरुषों द्वारा नियंत्रित क्यों किया जाता है? वे सेक्स करने में अपनी कठिनाइयों को व्यक्त क्यों नहीं कर सकती? वे बच्चे पैदा करने या न करने के संबंध में निर्णय क्यों नहीं ले सकती? वे जेंडर आधारित हिंसा क्यों सहन करती हैं? आप बोलते क्यों नहीं?"— इंदौर, भारत के हृदयस्थल, मध्य प्रदेश (एमपी) राज्य, में शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं के लिये प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकारों के कार्यक्रम के तहत महिला जगत लिहाज़ समिति (मजलिस) द्वारा आयोजित एक जेंडर अधिकार कार्यशाला में सुभद्रा प्रतिभागियों से ये सवाल पूछती हैं। ये प्रासंगिक प्रश्न हैं क्योंकि ये समाज पर शासन करने वाली पितृसत्ता को रेखांकित करते हैं और इस बात की पुष्टि एनएफएचएस IV द्वारा की गयी है, जो कहता है -

मध्य प्रदेश में सर्वेक्षण का उत्तर देने वाली विवाहित महिलाओं में से 27.3% पति के हाथों हिंसा का शिकार हैं।

प्रतिभागियों के बीच, बाईस वर्षीय रमा, एक रात पहले जो कुछ हुआ था, उससे बहुत नाराज़ थी। उसने कहा, "कुत्ता भी कुतिया की मर्ज़ी के बिना संबंध नहीं बनाता लेकिन आदमी तो जानवर से भी गया गुज़रा है।" जब मैंने अपने पति के साथ यौन संबंध बनाने से मना कर दिया, तो उसने मुझे गाली दी और कहा "*तुम किसी और के साथ भी सोती हो, बाहर भी तुम्हारा कोई पति है, छिनाल...*"

जब मैंने पच्चीस वर्षीय आशा से पूछा कि क्या वह अपने पति से उसके साथ यौन संबंध बनाने के लिये कह सकती है, तो उसने उत्तर दिया, "*मैं मरना नहीं चाहती और गाली नहीं खाना चाहती, मुझे पता है कि मैं इस दुनिया में अपनी इच्छा के अनुसार नहीं रह सकती।*"

इंदौर की आर्थिक रूप से कमज़ोर कॉलोनी, भूरी टेकरी में महिला प्रजनन स्वास्थ्य शिविर में बैठी, मैं महिलाओं के प्रजनन और स्त्री रोग संबंधी स्वास्थ्य के बारे में जानने के लिये उनसे बात करने की कोशिश कर रही थी। लेकिन मैंने महिलाओं के कई अलग-अलग व्यक्तिगत मामले जाने, जो उन्होंने खुद बताये हैं -

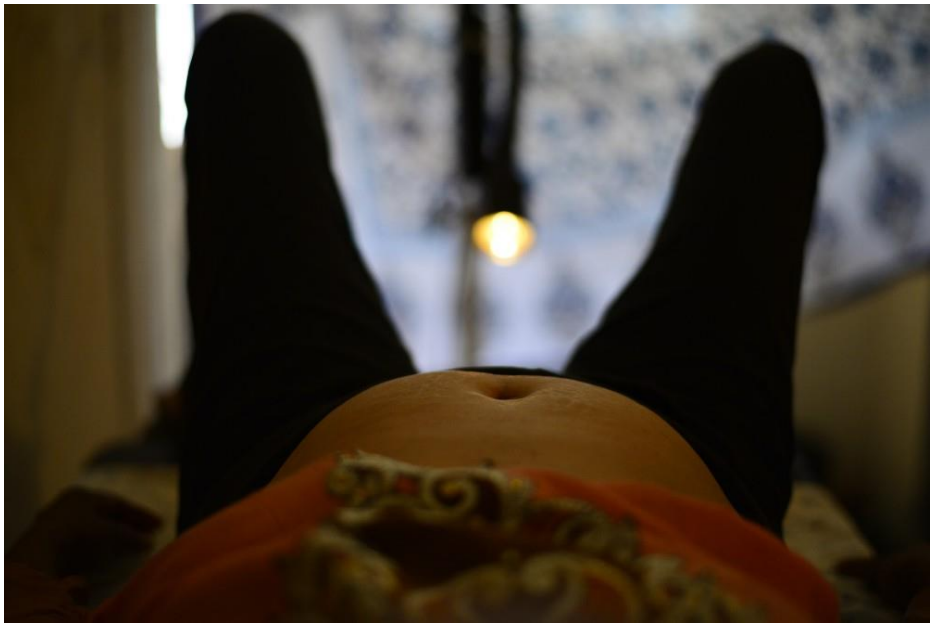

26 वर्षीय रजनी (बदला हुआ नाम) इंदौर में एक प्रजनन स्वास्थ्य शिविर में अपनी जांच करवा रही है।

रजनी की शादी तब हुई जब वह बारह साल की थी क्योंकि उसकी माहवारी शुरू हो गयी थी। उसने कहा, *'शादी के एक साल बाद पड़ोसी मुझसे पूछने लगे कि मैंने बच्चे को जन्म क्यों नहीं दिया। मैं उनके तानों को समझ नहीं पाई और मेरे पति से पूछा कि क्या मेरे बच्चे नहीं होने पर वह मुझे तलाक दे देंगे और उन्होंने कहा कि वो ऐसा कुछ नहीं करेंगे। अचानक एक दिन मुझे चक्कर आया और बहुत दर्द हुआ। कुछ महीने बाद पंद्रह साल की उम्र में मेरा पहला बच्चा हुआ। जब मैं बीस साल की थी तब तक मैं तीन बच्चों की माँ थी। मैंने नसबंदी कराने का फैसला किया क्योंकि यह नहीं कहा जा सकता था कि मेरे पति कब शराब पीकर घर आएंगे और मुझे दोबारा गर्भवती कर देंगे।*

विश्व में सबसे अधिक बालिका वधुएँ भारत में हैं। यूनिसेफ की 2018 की एक रिपोर्ट के अनुसार, अनुमान है कि भारत में 27% लड़कियों की शादी उनके 18वें जन्मदिन (सहमति की कानूनी उम्र) से पहले कर दी जाती है। ये ऐसे आँकड़े हैं जिन्होंने देश की शीर्ष अदालत को यह फैसला सुनाने के लिये प्रेरित किया कि कम उम्र की पत्नी के साथ संभोग एक आपराधिक अपराध है।

राजू बाई अपने बच्चों के साथ इंदौर में अपने घर पर।

राजूबाई, जो अब चालीस वर्ष की हैं, की शादी चौदह वर्ष की आयु में हुई थी और पंद्रह वर्ष की आयु में उन्होंने अपने पहले बच्चे को जन्म दिया। वे सात जीवित बच्चों की माँ हैं और दो अन्य की मौत हो चुकी है। *"जब मैं अपनी छठी गर्भावस्था के नौवें महीने में थी, एक दिन मुझे बहुत दर्द हुआ और जब मैं आराम करने के लिये एक कुर्सी पर बैठने गयी, तो बच्चा मेरी योनि से बाहर आ गया और सिर के बल फर्श पर गिर गया और तुरंत मर गया। मैं पांचवें बच्चे के बाद नसबंदी करवाना चाहती थी लेकिन मेरे ससुर ने कहा कि यह पाप है और ऐसा नहीं किया जाना चाहिये। लेकिन नौवीं गर्भावस्था के बाद मैं इतनी थक गयी कि मैं पाँच या छह अन्य महिलाओं के साथ अस्पताल गयी और नसबंदी कराने के लिये लेट गयी।"*

यूनिसेफ द्वारा जारी *नवजात मृत्यु दर रिपोर्ट* 2018 के अनुसार, 2016 में छह लाख से अधिक बच्चों की मृत्यु के साथ, सबसे अधिक शिशु मृत्यु दर वाले 52 निम्न मध्यम आय वाले देशों में भारत 12वें स्थान पर है। रिपोर्ट के अनुसार 2016 में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर देश में नवजात मृत्यु दर 25.4 है। भारत दुनिया का एकमात्र प्रमुख देश है जहाँ लड़कों की तुलना में लड़कियों की मृत्यु दर अधिक है।

'महिलाओं की तुलना में पुरुषों की नसबंदी करना सरल और कम चीड़फाड़ वाला काम है: पुरुष नसबंदी में ठीक होने में भी कम समय लगता है, जटिलताएं दुर्लभ होती हैं और मौतें कम होती हैं।'

वैश्विक साझेदारी - परिवार नियोजन 2020 (FP2020) द्वारा प्रस्तुत नवीनतम आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में उपयोग की जाने वाली आधुनिक गर्भनिरोधक विधियों में महिला नसबंदी का योगदान 74.4% है। इसके विपरीत, पुरुष नसबंदी केवल 2.3% है।

इंदौर की एक झुग्गी बस्ती में 35 वर्षीय सुनीता अपने बच्चे को लेकर पानी लाती है।

सुनीता ने कहा, *'हम महिलाएं बिना काम किये अपना जीवन नहीं जी सकतीं। हमें घरेलू काम और अपने बच्चों की देखभाल करनी होगी और आय अर्जित करने के लिये बाहर भी काम करना होगा। गर्भ में बच्चे पैदा करना बहुत मुश्किल होता है और उस समय हमें उचित भोजन और देखभाल नहीं मिलती है। इसलिये हमें जन्म देने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है और दर्द से हमारा शरीर टूट जाता है।"*

महिला जगत लिहाज़ समिति (मजलिस), के इंदौर की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं के लिये स्त्री रोग संबंधी स्वास्थ्य शिविरों के सर्वेक्षण के अनुसार, 76.1% महिलाएं एनीमिक हैं।

अधिक काम और कुपोषण जैसे कारकों के कारण एनीमिया भारत में महिलाओं के लिये अभिशाप है और विटामिन बी 12 की कमी एक महामारी है जो सीधे एनीमिया में योगदान देती है।

इंदौर संभाग के जूनापानी गाँव में 20 वर्षीय गारू अपनी दो माह की बेटी अमरावती को स्तनपान कराती है।

पच्चीस वर्षीय सुमन (फोटो में नहीं) ने अपने निजी जीवन के बारे में बात की। *"मेरा पति मुझपर शक करता है क्योंकि मेरी 'टॉयलेट की जगह' (योनी) थोड़ी फ़ैल गयी है। वो आये दिन मुझे गालियाँ देता है कि मैं और आदमियों के साथ सोती हूँ। मेरी योनी इतनी कैसे फ़ैल गयी?"* सुमन अपने पति को यह समझाने में असमर्थ है कि डॉक्टर ने उसके बच्चे की डिलीवरी (एपिसीओटॉमी नामक एक प्रक्रिया) की सुविधा के लिये उसकी योनी को काट दिया था और उसे फिर से सिलाई करने की जहमत नहीं उठाई थी क्योंकि दर्द में सुमन ने डॉक्टर को लात मारी थी।

32 वर्षीय किरण अपने बेटे के साथ इंदौर की झुग्गियों में अपनी रसोई में चाय बनाती है।

तीस साल की किरण की योनी को भी डिलीवरी के दौरान काट दिया गया था और बाद में उसे सिल दिया गया था। हालाँकि, अस्पताल में उसे इतना दर्द हुआ कि घर वापस आने के बाद उसने अपने टांके हटाने के लिये वापस जाने से इंकार कर

दिया। हर बार जब वह सेक्स करती है तो सिलाई के कारण दर्द होता है लेकिन वह इसे हटाने के लिये वापस जाने से इंकार कर देती है उसे दर्द की ऐसी याद आती है। *"मैं उस अस्पताल में वापस नहीं जाना चाहती जहाँ मैंने पिछली बार एक महीना दर्द में बिताया था। दोबारा डॉक्टर के पास जाने से अच्छा है कि इस दर्द को सह लूँ।"*

इंदौर में, माहवारी के खून को साफ करने के लिये इस्तेमाल किये जाने वाले कपड़े एक घर के वॉशरूम में दोबारा इस्तेमाल के लिये सूखने के लिये रखे हैं।

इक्कीस वर्षीय निर्मला ने कहा, *"महिलाओं के माहवारी के कपड़े को सुखाने के लिये कभी भी खुले में नहीं रखा जाता है। इन कपड़ों को आदमियों की निगाहों से दूर सुखाना पड़ता है अन्यथा यह पाप है। हमें भी शर्म आती है अगर कोई और इन कपड़ों को देख ले। माहवारी के खून को गंदा माना जाता है और इसका इस्तेमाल दूसरे लोग जादू-टोने के लिये भी करते हैं। इसलिये हम अपने माहवारी के कपड़े को बाथरूम के अंदर या जानवरों के शेड में गुप्त रूप से सुखाते हैं।"*

इंदौर में मलिन बस्तियों में प्रजनन स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करने वाली सुभद्रा खापेरडे ने कहा, *"ज्यादातर महिलाएं योनि के संक्रमण से पीड़ित होती हैं जैसे कि सफेद पानी (ल्यूकोरिया), योनि की सूजन, गर्भाशय ग्रीवा और उसपर अल्सर का क्षरण और माहवारी के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव होता है और लंबे समय तक दर्द और जटिलताओं को झेलना पड़ता है। इसके लिये वो न तो सरकारी अस्पतालों में और न ही निजी चिकित्सकों से उचित इलाज करवा पाती हैं क्योंकि उन्हें इन समस्याओं के बारे में बोलने में शर्म आती है। हमारा संगठन योग्य डॉक्टरों से उनकी जांच करवाता है और उन्हें दवाएं देता है। अक्सर महिलाओं के पति भी संक्रमित हो जाते हैं और इसलिये उनका भी इलाज करना पड़ता है, हालाँकि वे डॉक्टरों के पास जाने से हिचकिचाते हैं।"*

एनएफएचएस IV का कहना है कि मध्य प्रदेश में केवल 29.1% उत्तरदाता महिलाओं की सर्वाइकल जांच हुई थी। मजलिस शिविरों में डॉक्टरों द्वारा की गयी महिलाओं की नैदानिक परीक्षा से पता चला है कि आश्चर्यजनक रूप से उच्च 67.1% गर्भाशय ग्रीवा की समस्याओं से और 49.1% योनि संक्रमण से पीड़ित थी। एक पखवाड़े की दवा के माध्यम से उन सभी का संतोषजनक ढंग से बहुत आसानी से इलाज किया गया।

प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकार कार्यकर्ता सविता ने कहा, *"ज्यादातर पुरुष महिलाओं के प्रजनन पथ के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं। वे सुरक्षित सेक्स की ज़रूरत को नजरअंदाज कर देते हैं और इसे लेकर समाज में खामोशी की संस्कृति है। क्या यह आवश्यक है कि पुरुषों की इच्छाएं हमेशा पूरी हों, जबकि महिलाओं की इच्छाओं और खुशी को महत्वहीन माना जाता है? उत्तर है एक ज़ोरदार ना। महिलाओं को अपनी समस्याओं के बारे में बात करनी चाहिये और उनका समाधान तलाशना चाहिये।"*

*कुछ महिलाओं के नाम बदल दिये गये हैं। सभी तस्वीरें महिलाओं की अनुमति के बाद ली गयी हैं।

सभी तस्वीरें लेखक द्वारा ली गयी हैं।